UGC NET MASS COMUNICATION

SAMPLE THEORY

PAPER - III

- अन्तर्राष्ट्रीय संचार मुद्दे व अन्तर्राष्ट्रीय जनसंचार माध्यम
- कार्यक्रमों के विविध प्रकार,दृश्य–भाषा एवं कैमरा संचालन

VPM CLASSES
For IIT-JAM, JNU, GATE, NET, NIMCET and Other Entrance Exams
1-C-8, Sheela Chowdhary Road, Talwandi, Kota (Raj.) Tel No. 0744-2429714
Web Site www.vpmclasses.com E-mail-vpmclasses@yahoo.com

अन्तर्राष्ट्रीय संचार मुद्दे व अन्तर्राष्ट्रीय जनसंचार माध्यम

1. अन्तर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (International Telecommunication Unions)

आई.टी.यू की स्थापना सन् 1865 में अन्तर्राष्ट्रीय तार संघ (International Telegraph Union) के रूप में पेरिस नगर में व्यक्त की गई। इसका मुख्य उद्देश्य तार द्वारा समाचार भेजने की प्रक्रिया को विकसित करना तथा इसको अन्य समाचार प्रसारित करने वाले साधनों से सम्बद्ध करना था। मुख्य रूप से आकाशवाणी द्वारा समाचार प्रेषित करने की प्रक्रिया से सन् 1932 मे इसका नाम बदलकर अन्तर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (I.T.U) रखा गया। द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-45) के पश्चात् 1947 में अटलांटिक नगर में इसका पुर्नगठन किया गया। तत्पश्चात् 1949 ई. में इसका रूपान्तरण करके संयुक्त राष्ट्र के एक विशिष्ठ अभिकरण के रूप में स्थापित किया गया।

अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठन

यूनेस्को तथा आई.टी.यू के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र के अंगों द्वारा संचार प्रसारण के विकास में अन्तर सरकारी क्षेत्रीय संगठनों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐसे संगठनों में यूरोप परिषद् (Council of Europe), यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) अमेरीकी राष्ट्रों का संगठन (OAS) अफ्रीकी एकता हेतु संगठन (Organisation for African Unity) दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (SAARC) और आसियान आदि उल्लेखनीय है।

मैकब्राइड आयोग

सत्तर के दशक में तीसरी दुनिया की आवाज ने कुछ असर दिखाया। 1970 में आरंभ हुई बहस के अधीन अंतर्राष्ट्रीय संचार मुद्दों को सुलझाया गया। सूचना के 'एक दिशा प्रवाही' दुष्प्रवाह को बदलकर गुटनिरपेक्ष देशों के बीच सार्थक संबंध कायम करने के लिए 1975 में 'गुटनिरपेक्ष समाचार एजेन्सी कुल' की स्थापना की गई। इस संगठन ने समाचार प्रणाली को राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर संतुलित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यूनेस्को द्वारा 'जानने के अधिकार' को 'संचार करने का अधिकार' में बदल दिया गया। अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के अध्ययन हेतु 1977 में यूनेस्को ने सीयेन मैब्राइड की अध्यक्षता हेतु 1977 में यूनेस्को ने सीयेन मैकब्राइड की अध्यक्षता में 16 सदस्यीय अंतर्राष्ट्रीय आयोग का गठन किया, जो मैकब्राइड आयोग असमानताओं को दूर करने, मीडिया की प्राथमिकताओं के निर्धारण, मीडिया में नैतिकता, ईमानदारी और मानव मूल्यों तथा माध्यमों को जनोन्मुखी बनाने की दिशा में अनेक सुझाव दिए। विकसित देशों के सांस्कृतिक साम्राज्य को समाप्त

VPM CLASSES

करके विभिन्न देशों के सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व की अनुशंसा की। संचार के लोकतांत्रिक स्वरूप के लिए सेंसरशिप की व्यवस्था को समाप्त करने की बात भी कही गई। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और समझ पर बल दिया गया। 1981 में यूनेस्को ने इस आयोग की रिपोर्ट को स्वीकार भी कर लिया, लेकिन अमेरिका और पश्चिमी देशों ने आयोग की इस सिफारिश को नहीं माना कि –"संचार माध्यमों का उपयोग सामाजिक या आर्थिक नीति के औजार के रूप में किया जाए।"

2. अन्तर्राष्ट्रीय जनसंचार माध्यम

विश्व मुद्रण माध्यम

सामान्यतः मुद्रण माध्यमों से हमारा तात्पर्य समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं से है और विश्वव्यापी मुद्रण माध्यमों में हम उन अखबार एवं पत्रिकाओं की चर्चा करते हैं जो किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धित न होकर समूचे विश्व या अधिकांश विश्व तक अपनी पहुँच रखते हैं। ऐसे समाचार पत्र सामान्यतः एक से अधिक अंक प्रकाशित करते हैं उदाहरण के लिए, एक अंक अपनी मातृभाषा में, और कई अंक को 'अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण' का दर्जा प्राप्त होता है।

विश्वव्यापी मुद्रण माध्यमों में दो विषय सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते है – सामान्य समाचार पत्र एवं आर्थिक समाचार पत्र। विश्वव्यापी (ग्लोबल) मुद्रण माध्यमों में अग्रणी प्रकाशनों पर एक संक्षिप्त चर्चा –

द इण्टरनेशनल हेराल्ड ट्रिब्यून

यह न्यूयार्क टाइम्स व वांशिगटन पोस्ट द्वारा संयुक्त रूप से छपता है तथा इसका मुख्यालय फ्रांस में है। यह यूरोप का एक मुख्य समाचार पत्र है। इसकी 1991 के सर्वेक्षण में कुल प्रसार संख्या दो लाख से भी अधिक आँकी गई थी। द इण्टरनेशनल हेरॉल्ड ट्रिब्यून ने हाल ही में अपना शताब्दी वर्ष मनाया है। और वर्तमान में यह मियामी, हांगकांग एवं सिंगापुर सहित इस मुख्य महानगरों से छपता है।

यू.एस.ए टुडे इण्टरनेशनल

90,000 की प्रसार संख्या के साथ यूरोप में प्रकाशित होने वाला यह अपेक्षाकृत नया समाचार पत्र है। गैनेट समूह द्वारा शासित यह समाचार–पत्र स्विट्जरलैण्ड, सिंगापुर और हांगकांग में छपता है। इसका मुख्य उद्देश्य उन अमेरिकियों को समाचार देना है। जो विदेश यात्रा पर हैं या विदेशों में बस गये हैं हाल ही में यह रूस में भी लगा है।

VPMCLASSES

वर्ल्डपेपर

यह लघु समाचार पत्र (न्यूज पेपर सप्लीमेंट) बीस देशों में छपता है। और इसकी कुल प्रसार संख्या नौ लाख है। इसकी प्रकाशक वर्ल्ड टाइम्स कम्पनी है। जिसका मुख्यालय बोस्टन में है। इसके प्रसार क्षेत्र मुख्यतः लैटिन अमेरिकी राष्ट्र, एशियन देश और मध्य पूर्व है।

द फाइनेन्शियल टाइम्स ऑफ लंदन

नाम से ही स्पष्ट ही कि यह समाचार पत्र आर्थिक मामलों का विशेषज्ञ है और यूरोप तथा एशिया के शेयर बाजारों पर इस समाचार पत्र का काफी प्रभाव है। इसकी कुल प्रसार संख्या 50,000 है।

द इकोनोमिस्ट

पांच लाख से भी अधिक पाठकों तक पहुँच रखने वाले, लंदन केन्द्रित, इस समाचार पत्र को आर्थिक समाचार पत्रों का सम्राट बोला जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। अमेरिका में आसानी से उपलब्ध यह समाचार पत्र वर्जीनिया, लदंन और सिंगापुर से छपता हैं।

द वाल स्ट्रीट जरनल

अमेरिका का मशहूर अखबार स्तर के अखबारों में न्यूयार्क टाइम्स (अमेरिका) ली माण्डे (फ्रांस), एल–पायस (स्पेन), द टाइम्स (ब्रिटेन), द स्टेट्समैन (भारत) तथा अल अहरम (मिस्र) के नाम भी आते हैं।

विश्वव्यापी प्रसारण (Global Broadcasting)

जनसंचार माध्यमों में अखबार से अधिक लोकप्रिय दो अन्य माध्यमों रेडियों और टेलीविजन भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक तेजी से अपना प्रसार क्षेत्र फैला रहे हैं। आज लंदन का बीबीसी टेलीविजन हम दिल्ली में अपने शयनकक्ष में आराम से लेटे हुए देख सकते हैं तो अमेरिकन रेडियो का 'वायस ऑफ अमेरिका' भी अपने रेडियो सेट पर सुन सकते हैं। वर्तमान समय में लगभग डेढ़ सौ देशों के रेडियों प्रसारण केन्द्रों से शार्टवेव पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रसारण होता है। अधिकतर ये प्रसारण सत्ता के अधीन होते है। जिनका उपयोग शासन की नीतियों और अन्य प्रचार–प्रसार करने में होता है।

वॉयस ऑफ अमेरिका

वॉयस ऑफ अमेरिका, अमेरिका का विदेशी प्रसारण माध्यम अपने पाँचवे दशक में पहुँच रहा है। यह समाचारों, संगीत, समसामयिक चर्चाओं, रेडियो फीचरों का प्रसारण करता है।

वायस ऑफ अमेरिका के अनुसार इसकी पहुँच एक करोड़ से भी अधिक श्रोताओं तक है। जिसमें से अधिकांशतः रूस व पूर्वी यूरोप के श्रोताओं तक है। 1991 के सोवियत विघटन के समय रूस के लोगों

के पास एक मात्र विश्वसनीय स्त्रोत वॉयस ऑफ अमेरिका था। 'वॉयस ऑफ अमेरिका' मुख्यतः कम्यूनिस्ट विचार धारा के विरोध में प्रचार करने के लिए विकसित किया गया था। अमेरिका, इसके अलावा रेडियो भारती और टीवी भारती विशेष रूप से क्यूबा के लिए प्रसारित करता है।

रेडियो मास्को

सोवियत यूनियन के विघटन से पहले यह एक समय विश्व का सर्वाधिक लम्बा अन्तर्राष्ट्रीय प्रसारण होता था। अब कुछ नीतियों मे परिवर्तन की वजह से इसका पूर्व जैसा स्थान नहीं है।

बीबीसी

बीबीसी की विश्व प्रसारण सेवा का सही व निष्पक्ष समाचारों व विचारों के लिए बहुत नाम है। चूँकि बीबीसी सरकारी नियन्त्रण से मुक्त माध्यम है। इसीलिए सैद्धान्तिक रूप से यह बात सही भी लगती है। बीबीसी ने ही 'इण्टरनेशनल काल शो' की शुरूआत की है। जिसमें प्रतिष्ठित व्यक्तियों को श्रोताओं द्वारा टेलीफोन पर बात करने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। अपने सवा सौ करोड़ से भी अधिक श्रोताओं के लिए बीबीसी 37 भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित करते है।

रेडियो बीजिंग

रेडियो बीजिंग एक हफ्ते में 1400 घण्टों का कार्यक्रम 40 भाषाओं में प्रसारित करता है। 1970 के आसपास तक इसका एकमात्र उद्देश्य अमेरिका के विरोध में प्रचार–करना था परन्तु सुधरे सम्बन्धों के कारण अब इन प्रचारों में कमी आई है। रेडियो बीजिंग के मुख्य कार्य कार्यक्रमों में चीन की सांस्कृतिक जानकारी पर आधारित कार्यक्रम होते हैं।

ड्यूच वेले

प्रति सप्ताह 26 भाषाओं में 800 घण्टों का कार्यक्रम प्रसारित करने वाला यह रेडियो केन्द्र जर्मनी के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विशेष भूमिका निभाता है। इसका मुख्य लक्ष्य एशिया और अफ्रीका का विशाल श्रोता वर्ग है।

विभिन्न देशों में जनसंचार माध्यम

इससे पहले कि हम विभिन्न देशों में उपस्थित जनसंचार माध्यमों की तुलना करें हमें यह जान लेना चाहिए कि किसी भी देश की मीडिया वहाँ की राजनीति से सीधे सम्बन्धित होती है। राजनैतिक व्यवस्थाएँ मीडिया और शासन के बीच सम्बन्धों का निर्धारण करती हैं। पिछले तमाम वर्षों में इन सम्बन्धों को लेकर तमाम सिद्धान्तों पर बहस हुई है। यथा,

VPM CLASSES

प्रेस के सिद्धान्त

सोलहवीं शताब्दी से ही सरकार और मीडिया के बीच के सम्बन्धों को परिभाषित करने की कोशिश की जाने लगी तथा इसे 'मीडिया की स्वतन्त्रता और मीडिया पर नियन्त्रण' के रूप में बताया गया। इस दिशा में सर्वाधिक प्रभावपूर्ण कदम 1956 में उठाया गया जब 'फोर थ्योरीज ऑफ प्रेस' नामक किताब का प्रकाशन हुआ। ये चार सिद्धान्त हैं – ऑथीरिटैरियन, लिबरटेरियन, कम्यूनिस्ट और सामाजिक दायित्व।

मीडिया का स्वामित्व व नियंत्रण

फिनलैण्ड के प्रोफेसर ओस्मो वायो ने विभिन्न देशों की मीडिया की तुलना करने के लिए एक विवेचना पद्धति का आविष्कार किया है। इसके अनुसार स्वामित्व निजी संस्थाओं से लेकर जनता तक होता है। यहाँ जनता का स्वामित्व मुख्य रूप से जनता द्वारा चुनी गई सरकार का स्वामित्व होता है। नियन्त्रण दो प्रकार का हो सकता है। केन्द्रित व विकेन्द्रित। यह पद्धति बिल्कुल सही नहीं कहीं जा सकती फिर भी यह हमें विभिन्न देशों में संचार माध्यमों का अच्छा स्वरूप प्रदान करती है।

विभिन्न देशों में मीडिया की भूमिका

किसी भी देश के मीडिया की भूमिका उसकी सामाजिक, राजीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार तय की जाती है। उदाहरण के लिए, जिन विकासशील देशों मे मीडिया पर केन्द्रित नियंत्रण है वहाँ मीडिया की भूमिका राष्ट्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहयोगी की होनी चाहिए। वास्तव में एक नया आयाम 'विकासोन्मुख पत्रकारिता' इसी से संबंधित है। संक्षेप में विकासोन्मुख पत्रकारिता का अर्थ है। ऐसी पत्रकारिता जो राष्ट्र की एकता, अखंडता व सांस्कृतिक धरोहर को बनाये रखे। एक तरफ तो इस विकासोन्मुख पत्रकारिता का एक अर्थ यह है कि मूल्य वृद्धि, कृषि व अन्य कई प्रकार के जन सामान्य से सम्बन्धित मुद्दों की पत्रकारिता, तो दूसरी तरफ इसका एक अर्थ यह भी है कि सरकार के सिर्फ विकास कार्यों को अच्छे ढंग से प्रसारित किया जाए और आलोचना न की जाए। कई एशियन, लैटिन अमेरिकन व अफ्रीकन देशों की पत्रकारिता उपरोक्त दोनों सिद्धान्तों के बीच में उपस्थित रहती है। कम्यूनिस्टों के लिए मीडिया की भूमिका पानी की तरह स्पष्ट है– उनके सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार व शिक्षा। सूचना व ज्ञान के स्त्रोत के रूप में उन्हें नहीं जाना जाता है। यह सिद्धान्त लेनिन के समय का है जिसमें कहा गया है कि कम्यूनिस्ट प्रेस व क्रान्ति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

VPM CLASSES

कार्यक्रमों के विविध प्रकार,दृश्य–भाषा एवं कैमरा संचालन

1. कार्यक्रमों के विविध प्रकार

विविध कार्यक्रम एवं प्रभाग

संगीत– भारतीय सीमाओं को जीवित रखने और उसके प्रति जनता की रूचि जागृत करने में आकाशवाणी का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय संगीत की विविध विधाओं–शास्त्रीय, सुगम, लोक तथा जनजातीय एवं पाश्चात्य संगीत कार्यक्रमों के लिए 39.2 प्रतिशत् समय नियत है। संगीत के राष्ट्रीय कार्यक्रमों का प्रसारण प्रत्येक शनिवार को होता है। आकाशवाणी संगीत सम्मेलन के माध्यम से प्रतिवर्ष आकाशवाणी में आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष संगीत के विशेष कार्यक्रम आयोजित करता है नवोदित कलाकारों की संगीत की विषयक रूचि को बढ़ावा देने हेतु कर्नाटक और हिन्दुस्तानी दोनों के लिए क्षेत्रीय स्तर पर आकाशवाणी संगीत सम्मेलन का आयोजन करता है। युवा प्रतिभाओं के लिए आकाशवाणी संगीत की प्रतियोगिताएं भी आयोजित करता है। पुरस्कार प्राप्त कलाकारों को पेशेवर कलाकार के रूप में नियमित प्रसारण के अवसर भी प्रदान करता है। पुरस्कार प्राप्त कलाकारों को पेशेवर कलाकार के रूप में नियमित प्रसारण के अवसर भी प्रदान करता है। इस समय दिल्ली और चेन्नई में आकाशवाणी वाद्य वृंद नाम से राष्ट्रीय आर्केस्टा की दो इकाईयां कार्य कर रही हैं। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी तीन प्रमुख संगीत रचनाएं प्रस्तुत कर रही हैं। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी तीन प्रमुख संगीत समारोहों–त्यागराज, तानसेन और हरिदास संगीत समारोह को राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित करता है।

विविध भारती–

विविध भारती आकाशवाणी का अत्यन्त लोकप्रिय कार्यक्रम इस समय इसे आकाशवाणी के 45 केन्द्रों से प्रसारित किया जा रहा है। इनमें मुम्बई, दिल्ली चेन्नई और गुवाहाटी सहित चार शार्ट वेव स्टेशन भी हैं। सप्ताह के सामान्य दिनों में तथा रविवार और अवकाश के दिनों में इस कार्यक्रम की कुल समय–सीमा 14 घण्टे 15 मिनट होती है। इन कार्यक्रमों में मुख्यतया फिल्म संगीत, हास्य नाटिकाएं, लघु नाटक और कत्थक आदि ही प्रसारित किये जाते है।

विज्ञापन प्रसारण सेवा– 1967 में प्रयोग के तौर पर मुम्बई, पुणे और नागपुर से विज्ञापन प्रसारण सेवा प्रारम्भ की गयी। बाद में, इसका विस्तार 30 केन्द्रों तक कर दिया गया। इस सेवा के अन्तर्गत 10, 15, 20 और 30 सेकेन्ड टेप किये हुए विज्ञापन किसी भी भाषा में स्वीकार किये जाते हैं। राष्ट्रीय समाचारों के प्रसारण से पहले और बाद में सीमित आधार पर प्राइमरी चैनल (फेज–1) से 26 जनवरी,

VPM CLASSES

1985 में प्रायोजित कार्यक्रम आरम्भ किये गय। इस समय प्राइमरी चैनल (फेज–2) पर 55–केन्द्रों से विज्ञापन सेवा की भी शुरूआत 26 जनवरी 1985 में हुई। प्राइमरी चैनल (2) पर विज्ञापन प्रसारित करने वाले केन्दों की संख्या वर्तमान और प्राइमरी चैनल पर प्रसारित विज्ञापनों में 105 करोड़ रूपये की आमदनी हुई।

नाटक– आकाशवाणी पर प्रसारित रेडियो नाटक अत्यन्त सशक्त एवं लोकप्रिय विधा रही है। करीब 80 केन्द्र अपने–अपने क्षेत्र की भाषाओं और बोलियों में नाटक प्रसारित किये जाता है, जिसे हिन्दी के सभी केन्द्र द्वारा रिले किया जाता है। विभिन्न केन्द्रों से क्षेत्रीय भाषाओं में प्राप्त किया जाता है। विभिन्न केन्द्रों से क्षेत्रीय भाषाओं में प्राप्त महत्वपूर्ण नाटको का चुनाव कर उन्हें कर उन्हें हिन्दी में अनुवादित किया जाता है। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के केन्द्रों को भेजा जाता है। रेडियो नाटकों, उपन्यासों आदि के रूपान्तरण भी प्रसारित किये जाते हैं। 1987 से प्रमुख भारतीय भाषाओं में अखिल भारतीय नाटक प्रतियोगिता का आयोजन नई प्रतिभाओं की तलाश करने और उन्हें रेडियो नाटक लिखने के लिए प्रेरित करने के लिए किया जाता है।

सामाजिक और सामयिक– रेडियो पर देश में पहला समाचार बुलेटिन 23 जुलाई 1927 को मुम्बई से एक निजी रेडियो स्टेशन से प्रसारित किया गया। आकाशवाणी में समाचार कक्ष की शुरूआत 1937 में हुई, जहां से प्रथम बार समाचार बुलेटिन दिल्ली से प्रसारित हुआ।

1939–40 तक आकाशवाणी से 27 समाचार बुलेटिन प्रसारित होने लगे थे। इसके समाचार संगठन का केन्द्रीय समाचार संगठन का नाम दिया गया। बाद में इसको बदलकर समाचार सेवा प्रभाग कहा जाने लगा। समाचार संगठन सेवा प्रभाग की यह सेवा 97 प्रतिशत जनता को उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में रोजाना 288 समाचार बुलेटिन प्रसारित किये जाते हैं। जिनकी कुल प्रसारण अवधि 38 घण्टे 51 मिनट है। इनमें से 89 समाचार देश लिए हैं जिनकी प्रसारण अवधि 12 घण्टे 5 मिनट है। 41 क्षेत्रीय समाचार एकाशों से 17 घण्टे 51 मिनट की अवधि के 134 समाचार बुलेटिन प्रसारित होते है। विदेश सेवा के अर्न्तगत 8 घण्टे 55 मिनट की कुल अवधि के 65 समाचार बुलेटिन प्रसारण किया जाता है। 28 मई 1995 से समाचार सेवा प्रभाग में एफ. एम. चैनल पर भी समाचारों का प्रसारण आरम्भ कर दिया है। समाचार सेवा प्रभाग के कार्यक्रमों मे समाचार बुलेटिन के अतिरिक्त समीक्षाएं, चर्चाएं, अखबारी खबरों की समीक्षा, न्यूजरील, खेल तथा अन्य समायिक विषयों के कार्यक्रम भी शामिल होते हैं। 15 अगस्त 1993 से अंग्रेजी में जनरल न्यूज पूल की तरह ही हिन्दी समाचार पूल की स्थापना की गई। 2 अक्टूबर, 1991 से एक बजे सवेरे पांच बजे तक हर घंटे समाचारों के अतिरिक्त

VPM CLASSES

प्रसारण शुरू किया जाने के साथ ही अब आकाशवाणी से चौबीसों घंटे समाचारों का प्रसारण होन लगा है। इन समाचारों में खेल, युवा तथा धीमी गति के समाचार मुख्य हैं जिनका विशेष समाचार बुलेटिन प्रसारित होता है। हज के समय यात्रियों के लिए पांच मिनट का विशेष समाचार बुलेटिन जारी किया जाता है।

संसद के अधिवेशन के समय रोजाना हिन्दी मे लोकसभा तथा राज्यसभा की कार्यवाही की समीक्षा प्रसारित की जाती है। विधान मण्डलों की कार्यवाही की समीक्षा के प्रसारण का कार्य 41 क्षेत्रीय इकाईयां करती हैं जो आकाशवाणी के सिलचर केन्द्र ने सुबह पांच मिनट के समाचार का समाचार बुलेटिन 12 अक्टुबर, 1994 से शुरू किया है।

आकाशवाणी के समाचार संकलन का मुख्य दायित्व उसके संवाददाताओं पर है। कुल 108 संवाददाताओं में से 101 देश में तथा 7 विदेश में है। इसके अतिरिक्त 246 अंशकालिक संवाददाताओं के अतिरिक्त आकाशवाणी यू. एन. आई. पी. टी. आई संवाद एजेंसियों की सेवाएं भी लेता है। इसके अतिरिक्त समाचार प्राप्त करने का एक अन्य माध्यम मुख्य समाचार कक्ष से जुड़ा अनुश्रवण एकांश भी है। जहां विश्व भर के प्रमुख प्रसारण संगठनों के समाचार सुने जाते है।

विदेश सेवा प्रभाग–

आकाशवाणी का विदेश सेवा प्रभाग देश और विदेश दोनों भाषाओं के विविधमुखी कार्यक्रम प्रसारित करता है। यह प्रतिदिन 8 देशी तथा 16 विदेशी भाषाओं में 72 घंटे कार्यक्रम प्रसारित करता है। ये कार्यक्रम समाचार, समसामयिक विषयों तथा अखबारों की समीक्षा, न्यूजरील, खेल, साहित्य, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक मामलों से जुड़े होते हैं। विदेश सेवा प्रभाग अपने प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की अग्रिम सूचना देने के लिए अंग्रेजी में 'इण्डिया कॉलिग'

नामक एक स्वतंत्र मासिक पत्रिका भी निकालता है। इसके अतिरिक्त कुछ विदेशी भाषाओं में गैरमासिक फोल्डर भी प्रकाशित किये जाते हैं। विदेश सेवा प्रभाग सांस्कृतिक संगठनों को संगीत तथा अन्य कार्यक्रमों की रिकार्डिंग भी भेजता है। प्रत्येक शनिवार को यह प्रभाग विश्व के विभिन्न हिस्सों के लिए संयुक्त राष्ट्र समाचार प्रसारित करता है।

केन्द्रीय अनुश्रवण सेवा– केन्द्रीय अनुश्रवण सेवा आकाशवाणी महानिदेशालय का अधीनस्थ कार्यालय है। इसका मुख्य कार्य विदेशी रेडियो एवं दूरदर्शन द्वारा प्रसारित समाचारों और समाचारों पर आधारित कार्यक्रमों का अनुश्रवण करना और इस जानकारी को उच्च सरकारी अधिकारियों के पास भेजना है। और भारत से जुड़ी विदेशी गतिविधियों के एवं वक्तव्यों से उन्हें परिचित कराना है। इस जानकारी के

VPM CLASSES

आधार पर भारत विरोधी प्रचार को रोकने के और भविष्य की नीति निर्धारण करने में सहायता मिलती है। केन्द्रीय अनुश्रवण सेवा समाचार प्रभाग को महत्वपूर्ण समाचार भी भेजती है। सप्ताह में यह दो विशेष रिपोर्ट जारी करती है।, जिसमें एक कश्मीर पर होती है। इसमें पकिस्तानी दुष्प्रचार का विश्लेषण होता है। अनुश्रवण सेवा इस समय 30 देशों के रेडियों एवं दूरदर्शन के लगभग 500 प्रसारणों का अनुश्रवण करती है।

श्रोता अनुसन्धान– श्रोता अनुसन्धान का कार्य विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में श्रोताओं की प्रतिक्रया जानने का है। श्रोताओं की संख्या, उनके प्रचार तथा उन पर कार्यक्रम के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन और विश्लेषण भी इसमें शामिल होता है। श्रोता अनुसंन्धान आकाशवाणी महानिदेशालय और विभिन्न केन्द्रों की जरूरत के अनुसार अनुसंधान संबंधी आंकड़े भी उपलब्ध कराता है। इस समय श्रोता अनुसंधान के अन्तर्गत विभिन्न केन्द्रों में 48 इकाईयों के बीच समन्वय स्थापित करने और उन पर निगरानी रखने का कार्य करता है। प्राप्त अनुसंधानों के अनुरूप कार्य करने के और विशेष रिपोर्ट आदि तैयार करने का कार्य भी यह करता है। ध्वन्यांकन और कार्यक्रम आदान–प्रदान सेवा को तीन भागों में बांटा गया है। प्रथम ध्वनि रिकार्ड अभिलेखागार, द्वितीय ध्वन्यांकन और तीसरा कार्यक्रम आदान–प्रदान एकांश।

ध्वनि रिकार्ड अभिलेखागार में लोक संगीत रेडियो, नाटक, वृत्तचित्र, संस्मरण, संगीत–सम्मेलन और रेडियो जीवनियों का वृहत् संग्रह है। देश के महान नेताओं (गांधी, नेहरू आदि) तथा प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के भाषण भी यहां संरक्षित है। ध्वनांकन एकांश में देश के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि के भाषणों को एकत्र करके रखा गया है। ताकि भविष्य में उनका संदर्भानुकूल प्रयोग किया जा सके। कार्यक्रम आदान–प्रदान एकांश का मुख्य कार्य वार्ताएं, भेंट वार्ताएं, सामुदायिक गान व अन्य गाने, टेस्ट ट्रांसमिशन तथा श्रद्धांजलि सम्बन्धि सन्दर्भ जुटाने का है। इन्हें विभिन्न केन्द्रों से प्राप्त किया जाता है। और जरूरत के हिसाब से अन्य केन्द्रों को भेजा जाता है।

2. **दृश्य–भाषा**

लिखित पटकथा का दृश्यांकन (Visualisation of Written Script)

दूरदर्शन में लिखित पटकथा के दृश्यांकन की प्रक्रिया चार चरणों में पूर्ण होती है–

1. लेखन (Writting)
2. अभिनय / गायन (Acting-Singing)

VPM CLASSES

3. फिल्मांकन (To Filmise)– मंच, वस्त्राभरण, प्रसाधन, कैमरा, प्रकाश, व्यवस्था, प्रभावोत्पादक यंत्र आदि।

4. संपादन (Editing)– कट, फेड, डिजाल्व, सुपर कंपोजिशन आदि प्रणालियाँ।

लेखन के विषय में टेलीविजन लेखक के सिद्धान्त में चर्चा की जा चुकी हैं। यहाँ दूरदर्शन की कार्यप्रणाली और लिखित पटकथा के दृश्यांकन में सहायक व्यक्तियों और विभागों का उल्लेख अपेक्षित है–

1. निर्माता–निर्देशक (Producer Director)– इनका उत्तरदायित्व कार्यक्रम की सामग्री, प्रस्तुतीकरण, चयन तथा दृश्य–सामग्री के उचित संयोजन का है।

2. निर्माण सहायक (Production Assistant)– यह निर्माता–निर्देशक का सहयोगी होता है। पटकथाओं की तैयारी से लेकर कार्यक्रमों के रिहर्सलों की व्यवस्था का दायित्व भी वह निभाता है।

3. तल–प्रबंधक (Floor Manager)– कार्यक्रमों के सेट पर प्रसारण की व्यवस्था संबंधी निर्देश देता है।

4. कलाकार (Artist)– कैमरे के सम्मुख अभिनय के लिए कलाकरों की व्यवस्था की जाती है।

5. दृश्य प्रबंध अभिकल्पकार (Set Designer)– दृश्य प्रबंध की तकनीकी व्यवस्था करने वाले अभिकल्पकार भी पटकथा के दृश्यांकन को सुगम बनाते हैं।

6. ग्राफिक आर्टिस्ट (Graphic Artist)– पटकथा के दृश्यांकन के लिए यह कार्यक्रमानुसार कलात्मक साज–सज्जा प्रदान करता है।

7. रूपसज्जकार (Makeup Man)– कैमरे की आवश्यकतानुसार मुखाकृति की रूप–सज्जा प्रस्तुत करते है।

8. छायाकार (Camera Man)– टेजीविजन कार्यक्रमों के निर्माण में कैमरामैन का कौशल बहुत उपयोगी होता है। निर्माता–निर्देशक की आवश्यकता के अनुरूप शॉटस प्रस्तुत करना ही कार्यक्रम को सफल बनाता है पटकथा के दृश्यांकन में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी है।

इसके अतिरिक्त कलाकारों की वेशभूषा–चयन के लिए कास्ट्यूम डिजाइनर, संदर्भ– सामग्री के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष और कई सहायकों की आवश्यकता दृश्यांकन में पड़ती है। साथ ही निम्नलिखित प्रविधियों के उपयोग से पटकथा का दृश्यांकन प्रभावशाली बनाया जा सकता है–

VPM CLASSES

1. प्रकाश योजना (Light Effects)– प्रकाश का उचित प्रभाव चित्र को प्रभावशाली बनाता है। बैकलाइट, बैकग्राउंड लाइट, प्रकाश–छाया के मिश्रण का ज्ञान टेलीविजन प्रसारण की सफलता का रहस्य है।

2. ध्वनि प्रदूषण (Sound Effect)– ध्वनि प्रभाव भी पटकथा के दृश्यांकन को उपयोगी बनाता है।

3. संगीत (Music)– पार्श्वभूमि से उपयुक्त संगीत का प्रसारण भी पटकथा के दृश्यांकन में सहायक बनता है।

4. संपादन (Editing)– दृश्यों का संपादन भी दृश्यांकन में प्राण फूंक देता है।

3. **कैमरा संचालन**

कैमरा–दृश्य, गति, कोण एवं लेन्स (Camera Shots] Movements, Angles & Lenses)

वीडियो कैमरा 'आप्टीकल ईमेज' को विद्युत तरंगों (Electrical Signal) में बदल देता है। वीडियो कैमरे को तीन मुख्य भागों में बांटा जा सकता है –

1. कैमरा लेन्स व आप्टिक्स
2. पिकअप या ट्रांसड्यूसर
3. इलेक्ट्रोनिक्स

1. कैमरा लेन्स आप्टिक्स– कैमरा लेन्स फैसप्लेट पर चित्र ;पउंहमद्ध को फोकस करता है। अर्थात् उसकी 'आप्टीकल ईमेज' बनाता है। कैमरे के लेन्स का साईज फेस प्लेट पर चित्र बनाने के आकार के अनुसार होता है। फेस प्लेट पर चित्र 4:3 के अनुपांत में बनते है। लेन्स लैन्स का साईज कैमरे में 1" पिकअप ट्यूब का उपयोग करते हैं। वीडियो कैमरे के लेन्स में निम्न भाग होते हैं –

(i) फोकस भाग–इसमें चित्र सही रूप से फोकस करते हैं।

(ii) जूम भाग (Zoom-Section) इसमें हाथ से (manual) और 'सर्वो मोड' (Servo mode) से चित्र को फोकस करते हैं।

(iii) 'एपरचर भाग' (aperture section) इससे चित्र को 'हाथ' या आटो मोड' (manual or auto mode) से फोकस किया जाता है।

कैमरे की आप्टीकल असेम्बली में कल फिल्टर व्हील, आप्टीकल मिरर ब्लॉक वायस लाईट और लैन्स की सही माउन्ट करने का ब्लाक होता है। जूम लेन्स (zoom lens) की फोकस लेन्स 9 एम.एम के

VPM CLASSES

बीच रूपांतर (variable) होती है। अर्थात् जूम अनुपात (zoom ratio) 12:1 होता है। जूम लेन्स आजकल सभी कैमरों में होते है। लेन्स साधारणतया उनके कार्य पद्धति के अनुसार जाने जाते हैं जैसे शॉर्ट फोकल लेन्थ वाले लेन्स का 'वाईड एंगिल लेन्स' (wide angle lens) तथा 'लोंग फोकल लेन्थ' का 'नेरो एंगिल' या टेलीफोन लेन्स (Narrow angle or telephone lens) कहते है। लेन्स का एक अन्य भाग होता है। 'आयरिस' एडजस्ट करते हैं। अर्थात् इससे लाईट की मात्रा कंट्रोल करते हैं जो लेन्स से गुजरती है। 'डेप्थ ऑफ फिल्ड' (Depth of field) लेन्स की मुख्य बात है। 'डेप्थ ऑफ लेन्स' का अर्थ है कि कोई भी वस्तु वह दूरी जो लेन्स के पास तक बना फोकस बिगाड़े (without going soft focus) तक हो। 'डेप्थ ऑफ फील्ड' कलाकार की कैमरे से दूरी, लेन्स की फोकल लेन्थ और आयरिस ओपनिंग पर निर्भर करता है।

फिल्टर (Filter)

रिकार्डिंग में कई बार कैमरे के साथ फिल्टर का उपयोग भी किया जाता है। 'फिल्टर' कैमरे के लेन्स में से गुजरती 'लाईट' का प्रभाव बदल देता है। अर्थात् उसके कलर भी बदल जाते है। वीडियो कैमरा लैन्स तापमान के परिवर्तन को एडजस्ट नहीं कर पाता है। यदि किसी भी वस्तु या दृश्य को 3200*K लाईट पर प्रकाशित किया जाए तो सभी वीडियो कैमरे वास्तविक कलर रिकार्ड करते हैं। यदि कोई दृश्य सूर्य की धूप में रिकार्ड करना हो तो (जिसका तापमान 5400*K होता है) दृश्य के ऊपर एक 'फोटोग्राफिक फिल्टर' का उपयोग करते हैं जिससे प्रकाश का तापमान 3200*K तक हो सकता है। जिससे वास्तविक कलर रिकार्ड हो सकेंगे। इस तरह के फिल्टर को 'कलर करक्शन फिल्टर' (colour correction filter) कहते है। सभी फिल्टर अपने अन्दर से गुजरने वाली लाईट (absorb) कर लेते है। जिस कारण कैमरे की 'आयरिस' (Iris) आवश्यकतानुसार एडजस्ट करते हैं। कैमरे के अन्दर रिंग के क्रमांक तापमान को दर्शाते हैं। नीचे ई.एन.जी. कैमरा 'सोनी एम 3 पी' व स्टूडियो कैमरा के.सी. 40 कैमरे की फिल्टर रिंग का ब्यौरा दे रहे है –

सोनी एम 3 पी कैमरा	**KCK 40 कैमरा**
0–ब्लाईन्ड (Blind)	0–ब्लाईण्ड (Blind)
1–क्लीयर	1–3200*K
2–5400*K	2–3800*K

VPM CLASSES

3–5400*K 3–4800*K

4–4800*K

5–6500*K

6–6500*K

2. पिकअप या ट्रांसड्यूसर (Pick or Transducer)

तीन तरह के पिकअप उपाय काम में लाते हैं।

(a) फोटो इसिसिव पदार्थ (Photo Ecissive) – इस पदार्थ पर जब प्रकाश पड़ता है। तो इलेक्ट्रोन उत्पन्न होते है। इलेक्ट्रोन उत्पन्न होने की मात्रा लाईट पर निर्भर करती है। श्वेत–श्याम कैमरे इसी शैली पर बने होते है। इन कैमरों को 'इमेज आरथीकोन' (Image Orthican) कहते हैं।

(b) फोटो कंडकटिव पदार्थ (Photo conductive) – इन पदार्थो की संवहन गुणवत्ता (Conductivity) इनके ऊपर पड़ने वाले प्रकाश की मात्रा पर निर्भर करती है। इन पदार्थों की संवहन गुणवत्ता रूपांतरित कैमरे इसी सिद्धान्त पर श्वेत या श्याम (B&W) टी.वी के लिए बनाए थे। इस प्रकार के कैमरों में कई कमियां थी जिस कारण उनमें सुधार करके 'प्लम्बीकेन' (Plumbicon) और 'सेटीकोन' (Saticon) कैमरों का निर्माण किया गया।

(c) 'चार्ज–कपल्ड' युक्ति (charge-coupled device) उपचालक पदार्थ (Semi-conductor materials) लाईट को 'चार्ज ईमेज' में बदल देते है। जो उच्च गति से इलेक्ट्रीकल सिग्नल में परिवर्तित कर देते हैं। अर्थात् 'चार्ज कपल्ड डिवाईस' (CCD) एक 'ट्रासड्यूसर' है जो 'आप्टिकल सिग्नल' को विद्युत सिग्नल में परिवर्तित कर देती है। सी.सी.डी कैमरों का ही अधिक प्रयोग किया जाता है। जिनकी पिक–अप ट्यूब 2/3 "एफ.आई.टी (FIT) लेन्स सी.सी.डी चिप जिसका रेसोल्यूशन 850 लाईन तथा पिक्सल काऊन्ट (Pixel count) 6,00,000 पिक्सल तथा बहुत कम प्रकाश 6.0 लूमन में भी अच्छा काम करता है।

VPM CLASSES